International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 2, February- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

हमीरपुर तहसील उत्तर प्रदेश में महिला अधिकारिता पर अध्ययन

ज्योति सिंह, शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय

डॉ. प्रतिमा शुक्ला, शोध निर्देशक, समाजशास्त्र विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय

सार

भारत सरकार का ग्रामीण विकास मंत्रालय पंचायती राज संस्थाओं के संवर्धन एवं विकास के लिए पर्याप्त कार्य कर रहा है। ग्रामीण विकास तब तक संभव नहीं है जब तक हमारे पास सभी विवरणों पर स्पष्टता के साथ एक मजबूत पंचायती राज व्यवस्था नहीं है। केवल एक संरचना बनाने से कोई फायदा नहीं होगा जब तक कि निर्धारित नीतियों के अनुसार इसकी कार्यप्रणाली सुनिश्चित नहीं की जाती है। ग्रामीण विकास मंत्रालय ने पंचायती राज संस्थाओं को उचित दर्जा नहीं दिया है क्योंकि केवल एक संयुक्त सचिव ही पंचायती राज संस्थाओं का विषय है। पंचायती राज संस्थाएं इतनी बड़ी और जटिल हैं कि उन्हें अपने मुद्दों को संभालने के लिए एक स्वतंत्र विभाग की आवश्यकता है। मंत्रालय का नाम इस प्रकार रखा जा सकता हैरू ग्रामीण विकास और पंचायती राज मंत्रालय। इससे पंचायती राज संस्थाओं की स्थापना को आवश्यक दर्जा एवं अधिकार प्राप्त होगा। राज्य सरकारें भी सूट का पालन करने के लिए प्रोत्साहित महसूस करेंगी। वर्तमान में ग्रामीण विकास मंत्रालय के पास पंचायती राज संस्थाओं का कोई नाम नहीं है। ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार को 1992 के अधिनियम के अधिनियमन का श्रेय दिया जाता है लेकिन अधिनियम में कई अस्पष्टताएं हैं। इसके अलावा, राज्य सरकारों ने 73वें संशोधन प्रावधानों को लागू करने के लिए कानून बनाए हैं। ये कानून अच्छी गुणवत्ता के नहीं हैं। यदि ग्रामीण विकास मंत्रालय सभी राज्यों के मार्गदर्शन के लिए एक आदर्श कानून तैयार करे तो यह सभी राज्यों के हित में होगा। केंद्र प्रायोजित योजनाएँ पंचायती राज संस्थाआ के लिए समस्याएँ पैदा करती हैं क्योंकि उन्हें इन कार्यक्रमों की एक अलग पहचान बनाए रखनी होती है। राज्य सरकार द्वारा दिए जाने वाले ऐसे कार्यक्रमों के साथ–साथ पंचायती राज संस्थाएं अपने कार्यक्रम भी चला रही हैं। इसका परिणाम अत्यधिक लिपिकीय कार्य, जटिल लेखांकन और लेखा परीक्षा, भ्रष्टाचार और चोरी, स्थानीय स्तर पर विशेषज्ञता की कमी और दूर के स्थानों से यात्रा और निरीक्षण पर अनावश्यक व्यय होता है। इसलिए, स्थानीय जरूरतों और मांगों को पूरा करने के लिए मितव्ययिता और दक्षता और लचीलेपन को सुनिश्चित करने के लिए कद्र, राज्य और स्थानीय सरकार की योजनाओं के विलय की आवश्यकता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 2, February- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

1. परिचय

महिलाएं समाज का आधा हिस्सा हैं, लेकिन वे राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के अवसरों से दूर हैं। विकलांग महिलाओं की बड़े पैमाने पर उपेक्षा की गई है। साथ ही कई सामाजिक नियमा और विनियमों के कारण, वे कभी भी निर्णय लेने की प्रक्रिया का हिस्सा नहीं बनते हैं। यद्यपि वर्तमान में महिलाओं को संविधान और कानूनी प्रावधानों के अनुसार पुरुषों के समान दर्जा प्राप्त है, लेकिन फिर भी उन्हें अभी एक लंबा रास्ता तय करना है। यह सच है और साबित हो गया है कि "एक देश समृद्ध होता है यदि उसकी महिलाएं समृद्ध होती हैं"। इसलिए महिला सशक्तिकरण समाज के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। 'सशक्तिकरण' का अर्थ है 'अधिकृत करना'। लोगों के संदर्भ में, उन्हें अपने जीवन पर नियंत्रण रखने के लिए अधिकृत होना चाहिए। सशक्तिकरण ही समाज के दमन, शोषण, अन्याय और अन्य रागों का प्रभावी उत्तर है। संक्षेप में, महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं को अपनी रचनात्मक क्षमताओं और इच्छाओं को पूरा करने और स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने का अवसर देना है। इसके सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आयाम हैं।

भारत मुख्य रूप से गांवों की भूमि है और भारत की कुल आबादी का लगभग 72[illegible] ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है। इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्र भारत में शासन की जड़ें बनाते हैं और लोकतंत्र की शुरुआत उसी से होनी चाहिए। महात्मा गांधी ने यह भी कहा था कि विकास और शासन के लिए मुख्य तत्व बड़े शहर नहीं बल्कि गांव होना चाहिए क्योंकि यह वह जगह है जहां भारत रहता है। भारत में, हमारे पास ग्राम स्तर पर शासन के लिए एक अनूठी प्रणाली है। भारत की ऐसी छोटी इकाई का शासन पंचायती राज संस्थाओं नामक संस्थाओं द्वारा होता है। पंचायती राज संस्थान अपने अस्तित्व को पंचायतों के शीर्ष के तहत भाग IX के तहत संविधान से प्राप्त करता है। पंचायत की कहानी सिर्फ कुछ दशक पुरानी नहीं है; बल्कि यह भारत में युगों से प्रचलित है।

ऋग्वैदिक काल में, यानी लगभग 1200 ई.पू. वहाँ सभा थी जा क्षेत्र के प्रशासन का प्राथमिक कार्य करती थी। सभा की यह अवधारणा धीरे–धीरे पंचायत में परिवर्तित हो गई और इसे इसलिए कहा गया क्योंकि इसका नेतृत्व लोग करते थे। मध्यकाल में ग्रामीण क्षेत्रों में जमींदारी प्रथा के बढ़ने के कारण पंचायती व्यवस्था बिगड़ गई। इसके परिणामस्वरूप प्रशासन का कार्य धीरे–धीरे कर संग्रह में परिवर्तित हो गया। इस समय भी गाँव के प्रशासन के लिए एक अलग तंत्र था, हालांकि पंचायती राज की अवधारणा बिगड़ गई।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 2, February- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

1.1 महिला सशक्तिकरण की अवधारणा

पुरुषों और महिलाओं के बीच संबंधों में असमानता की घटना सावभौमिक है लेकिन इसका परिमाण समाज से समाज में भिन्न होता है। विभिन्न समाज पुरुषों और महिलाओं की विशेषताओं का अलग–अलग मूल्यांकन करते हैं और ये सामाजिक विश्वासों, दृष्टिकोणों और मूल्यों का हिस्सा बन जाते हैं। इसलिए, महिलाएं एक सामाजिक श्रेणी बन जाती हैं न कि एक जैविक श्रेणी (सैसेन, 2002, पृष्ठ 376)। इस प्रकार, महिलाओं को श्रम के सामाजिक विभाजन यानी उनकी भूमिकाओं, अधिकारों और दायित्वों में पुरुषों के साथ संयोजन के रूप में माना जाना चाहिए। इसके अलावा, ये सेक्स विशिष्ट भूमिकाएं, अधिकार और दायित्व सिर्फ अलग नहीं हैं; वे असमान भी होते हैं।

मानव कामकाज के लगभग हर क्षेत्र में, महिलाओं के लिए परिभाषित भूमिकाएं पुरुषों के लिए परिभाषित भूमिकाओं के अधीन हैं, महिलाओं के अधिकार पुरुषों की तुलना में कम और कम मुक्तिदायक हैं और महिलाओ के दायित्व पुरुषों की तुलना में अधिक सीमित हैं। पुरुषों और महिलाओं के बीच एक असमान संबंध का अर्थ है कि पुरुषों के पास न केवल जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में महिलाओं की तुलना में अधिक शक्ति है और वे महिलाओं पर सांस्कृतिक और अक्सर कानूनी रूप से स्वीकृत शक्ति भी रखते हैं। इस संदर्भ में महिला सशक्तिकरण की अवधारणा प्रासंगिक हो जाती है।

हाशिए के वर्गों का सशक्तिकरण अब विकास साहित्य में नारा है, खासकर महिलाओं के संदर्भ में राजनेता और नौकरशाह अपने भाषणों में इसका इस्तेमाल करते हैं, विद्वान इसके बारे में किताबों, पत्रिकाओं और विद्वान लेखों में लिखते हैं, और पत्रकार इसे अपने संपादकीय और टिप्पणियों में स्वतंत्र रूप से उपयोग करते हैं। यह महिलाओं पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलनों में, विशेष रूप से 1995 में बीजिंग (चीन) में, 1994 में काहिरा में विश्व जनसंख्या सम्मेलन और 1985 में नैरोबी सम्मेलन में अक्सर सुना जाने वाला शब्द था, जिसमं भाग लेने वाले देशों को महिलाओं की भागीदारी के लिए कदम उठाने का आह्वान किया गया था। सभी चुनावों में 35 प्रतिशत सीटों के आरक्षण के माध्यम से राजनीति में।

अवधारणा के व्यापक और लोकप्रिय उपयोग के तथ्य ने इसे परिभाषित करना मुश्किल बना दिया है। इसलिए एक अनुभवजन्य जांच के लिए इसे परिभाषित करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

महिला सशक्तिकरण (या महिला सशक्तिकरण) को कई तरह से परिभाषित किया जा सकता है, जिसमें महिलाओं के दृष्टिकोण को स्वीकार करना, उन्हें खोजने का प्रयास करना और शिक्षा, जागरूकता, साक्षरता और प्रशिक्षण के माध्यम से महिलाओं की स्थिति को ऊपर उठाना शामिल है। महिला सशक्तिकरण महिलाओं को विभिन्न सामाजिक समस्याओं के माध्यम से जीवन–निर्धारण निर्णय लेने के लिए तैयार करता है और अनुमति देता है। उनके पास लिंग भूमिकाओं या अन्य ऐसी भूमिकाओं को

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 2, February- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

फिर से परिभाषित करने का अवसर हो सकता है, जो उन्हें वांछित लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए अधिक स्वतंत्रता की अनुमति देता है।

महिला सशक्तिकरण विकास और अर्थशास्त्र में चर्चा का एक महत्वपूर्ण विषय बन गया है। आर्थिक सशक्तिकरण महिलाओं को संसाधनों, संपत्तियों और आय पर नियंत्रण और लाभ उठाने की अनुमति देता है। यह जोखिम को प्रबंधित करने और महिलाओं की भलाई में सुधार करने की क्षमता में भी सहायता करता है। इसका परिणाम किसी विशेष राजनीतिक या सामाजिक संदर्भ में तुच्छ लिंगों का समर्थन करने के दृष्टिकोण में हो सकता है। जबकि अक्सर परस्पर विनिमय के लिए उपयोग किया जाता है, लिंग सशक्तिकरण की अधिक व्यापक अवधारणा किसी भी लिंग के लोगों से संबंधित है, एक भूमिका के रूप में जैविक और लिंग के बीच के अंतर पर जोर देती है।

महिला सशक्तिकरण साक्षरता, शिक्षा, प्रशिक्षण और जागरूकता सृजन के माध्यम से महिलाओं की स्थिति को बढ़ावा देने में मदद करता है। इसके अलावा, महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य महिलाओं की रणनीतिक जीवन विकल्पों को बनाने की क्षमता से है जिन्हें पहले उन्हें अस्वीकार कर दिया गया था।

महिला सशक्तिकरण की धारणा को अपनाने वाले कार्यक्रमों और नीतियों को लागू करने से राष्ट्रों, व्यवसायों, समुदायों और समूहों को लाभ हो सकता है। महिला सशक्तिकरण विकास के लिए उपलब्ध मानव संसाधनों की गुणवत्ता और मात्रा को बढ़ाता है। अधिकारिता मानव अधिकारों और विकास को संबोधित करते समय मुख्य प्रक्रियात्मक चिंताओं में से एक है।

पंचायतों पर राज्य का नियंत्रण और पर्यवेक्षण

पंचायतें संसाधनों के लिए राज्य और केंद्र सरकार पर निर्भर हैं। इसके अलावा, वे संघ से स्थानीय स्तर तक शासन प्रणाली का एक अभिन्न अंग हैं। इसलिए, उन्हें ट्रैक पर रखने के लिए उन्हें नियंत्रित करने और पर्यवेक्षण करने की आवश्यकता है। हालाँकि, यह नियंत्रण इतना कठोर नहीं हो सकता है कि पंचायतें अपनी पहचान खो दें और सरकारी तंत्र का हिस्सा बन जाएँ। राज्य/केन्द्र सरकार की रचना होने के कारण पंचायतें गैर–संप्रभु निकाय हैं। इसलिए, इन निकायों को सौंपे गए कार्यों का उचित प्रदर्शन सुनिश्चित करना राज्य/केंद्र सरकार की जिम्मेदारी है। कराधान जांच आयोग ने इंगित किया है कि स्थानीय निकायों के समुचित कार्य को सुनिश्चित करने में राज्य सरकार की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह देखना उसका उत्तरदायित्व है कि स्थानीय निकाय कुशलतापूर्वक संगठित हों, अपने कार्यों का ठीक से निष्पादन करें और देश के विकास में उनकी पर्याप्त भागीदारी हो। राज्य नियंत्रण का उद्देश्य और उद्देश्य स्थानीय स्वशासन संस्थाओं को प्रशासन के कुशल उपकरणों के रूप में विकसित करना होना चाहिए, जो नीतियां बनाने और उन्हें लागू करने में सक्षम हों। राज्य के नियंत्रण को दक्षता के आधार

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 2, February- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

पर उचित ठहराया जा सकता है, उन्हें स्थानीय हितों से अलग करना, क्षेत्रीय असंतुलन का कम करना, वित्त में वृद्धि करना, विशेषज्ञ ज्ञान और तकनीकी कौशल प्रदान करना, राष्ट्रीय हितों को उनके प्रारंभिक चरणों में संरक्षित करना और सबसे ऊपर, ध्वनि सामाजिक–आर्थिक नियोजन की सुविधा के लिए। राज्य का नियंत्रण और पर्यवेक्षण आवश्यक है और लगभग सभी देशों में अलग–अलग डिग्री में लागू किया जाता है क्योंकि स्थानीय अधिकारी राज्य की कानूनी रचनाएँ हैं; वे राज्य के केवल एक छोटे से हिस्से पर शासन करते हैं और महत्वपूर्ण राष्ट्र निर्माण गतिविधियों के संबंध में सभी क्षेत्रों के समान और समरूप विकास के लिए राज्य सरकार द्वारा समन्वय आवश्यक हो जाता है; स्थानीय अधिकारियों के पास राज्य सरकार के जितना तकनीकी कौशल नहीं हो सकता है; उनका अनुभव भी एक विशेष इलाके तक ही सीमित है; दूसरी ओर, सरकार के पास सभी स्थानीय समुदायों के अपने लंबे समृद्ध अनुभव से प्राप्त ज्ञान का लाभ है, और इसके रोजगार में प्रशासन के बेहतर तरीके हैं; किसी भी रूप में वित्तीय सहायता का अर्थ है नियंत्रण; और सरकार के पास यह देखने की शक्ति होनी चाहिए कि अग्रिम धन का उचित उपयोग किया जाए।

2. अध्ययन का उद्देश्य

1 पंचायती राज समझौते के अपने ज्ञान के आधार पर महिला उत्तरदाताओं की भागीदारी का मूल्यांकन करें।

2 विकास कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी की जागरूकता उनकी जागरूकता और उनके कार्यान्वयन में उनकी भागीदारी के आधार पर अध्ययन करना।

3 पंचायती राज गठबंधन में महिला उत्तरदाताओं की भागीदारी के प्रभाव पर चर्चा करना और जमीनी स्तर पर उत्तरदाताओं की सामाजिक आर्थिक पैठ की जांच करना।

3. अनुसंधान क्रियाविधि

इस अध्ययन का आकलन करने के लिए शोधकर्ता ने डेटा एकत्र करने और विश्लेषण करने की प्रारंभिक तकनीकों के साथ आवश्यक डेटा एकत्र करने पर काम किया है। शोधकर्ता ने डेटा का विश्लेषण करने के लिए किसी विशिष्ट उपकरण पर काम नहीं किया है। शोधकर्ता सरल डेटा विश्लेषण उपकरणों का उपयोग करता है जिसने उसे आवश्यक परिणाम दिए। अध्ययन की दृष्टि से अभी तक विश्लेषण की विधि सरल है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 2, February- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

नमूने का आकार

अध्ययन का नमूना आकार 240 उत्तरदाताओं का है। उत्तरदाताओं ने विषय पर शोधकर्ता के सर्वेक्षण में सक्रिय रूप से भाग लिया है और डेटा एकत्र करने का तरीका इस अध्ययन के लिए शोधकर्ता द्वारा तैयार की गई प्रश्नावली पर आधारित है।

4. डेटा विश्लेषण

यह कार्यप्रणाली भाग पर तैयार किए गए विशेष पहलुओं पर डेटा का विश्लेषण करने की प्रक्रिया है। शोधकर्ता ने इस अध्ययन के लिए मुख्य रूप से प्राथमिक डेटा पर काम किया है और तदनुसार एक प्रश्नावली तैयार की है।

तालिका संख्या 1

निर्वाचित वर्तमान स्थिति से पहले पंचायती राज संस्थाओं में उत्तरदाताओं की भागीदारी की प्रकृति को प्रस्तुत करने वाली तालिका

भागीदारी की प्रकृति	संख्या	प्रतिशत
हर समय	10	4.16
अधिकांश बार	18	7.5
अक्सर	26	10.83
कम अक्सर	62	25.83
कभी नहीं	124	51.66
कुल	240	100

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 2, February- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

तालिका संख्या 1 वर्तमान स्थिति के निर्वाचित होने से पहले उत्तरदाताओं की भागीदारी की प्रकृति को दर्शाते हुए, 4.16 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि वे लंबे समय से पीआरआई की बैठक में भाग ले रहे थे। जबकि, 7.5 प्रतिशत ने बहुमत स्वीकार किया, 8.33 प्रतिशत ने अक्सर स्वीकार किया, 25.83 प्रतिशत ने कम बार स्वीकार किया और 51ण्66 प्रतिशत ने कभी स्वीकार नहीं किया। यह स्पष्ट है कि बड़ी संख्या में निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों को पंचायती राज संस्थाओं की बैठक का अनुभव नहीं था कि यह कैसे कार्य कर रही है। यह पंचायती राज संस्थाओं के सदस्यों के सामने एक चुनौती है और यह दर्शाता है कि प्रतिनिधियों के लिए प्रशिक्षण अनिवार्य है।

तालिका संख्या 2

पेरिस में उत्तरदाताओं की प्रेरणा पर आधारित टेबल शो

प्रेरणा के आधार	संख्या	प्रतिशत
खुद	22	9.16
पति	84	35.0
परिवार का सदस्य	45	18.75
रिश्तेदारों	20	8.33
स्थानीय नेता	41	17.08
राजनीतिक दल	28	11.66
कुल	240	100

तालिका 2 पंचायती राज संस्थाओं में उत्तरदाताओं की प्रेरणा के आधार को प्रदर्शित कर रहा है। तालिका के अनुसार, 9.16 प्रतिशत सक्रिय महिलाएँ स्वयं प्रेरित थीं, जबकि 35ण्0 प्रतिशत पति बैंड

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 2, February- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

से प्रेरित थीं, 18.75 प्रतिशत परिवार के सदस्य से प्रेरित थीं, 8.33 प्रतिशत रिश्तेदारों के माध्यम से प्रोत्साहित थीं, 17.08 स्थानीय नेताओं से प्रेरित थीं और 11.66 राजनीतिक दलों से प्रेरित थीं। तालिका के विश्लेषण के बाद, यह स्पष्ट है कि पति, परिवार के सदस्य और स्थानीय नेता प्रमुख भूमिका निभाते हुए महिला प्रतिनिधियों को पीआरआई चुनाव का सामना करने के लिए प्रेरित करते हैं और पीआरआई की बेहतरी के लिए अपनी क्षमता का योगदान करते हैं। इस संदर्भ में। महिलाओं की निर्णय लेने की शक्ति बहुत कम है जो राज्य और समाज के लिए भी चिंताजनक है।

तालिका संख्या 3

पंचायती राज संस्थाओं में निर्वाचित महिला प्रतिवादी और अवधियों की संख्या दर्शाने वाली तालिका

अवधियों की संख्या	संख्या	प्रतिशत
पहली अवधि	185	77.08
दूसरी अवधि	52	21.66
तीसरी अवधि	03	1.25
चार अवधि	0	0 0
कुल	240	100

तालिका संख्या 3 दर्शाती है कि 77.08 प्रतिशत महिला प्रतिनिधि ने पहली बार निर्वाचित किया था, जबकि 21.66 प्रतिशत प्रतिनिधि ने तीसरी बार निर्वाचित किया था, 1.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने तीसरी बार निर्वाचित किया था, किसी भी प्रतिवादी ने तालिका के विश्लेषण के बाद चौथी बार निर्वाचित नहीं किया था, यह स्पष्ट है कि पूर्ण अधिकांश प्रतिवादी पहली बार चुने गए थे और स्वाभाविक रूप से उनके पास कम अनुभव है। इसलिए, उत्तरदाताओं के लिए अपनी बेहतरीन भूमिका निभाने के लिए पर्याप्त और स्थानीय संस्कृति उन्मुख प्रशिक्षण फायदेमंद होगा।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 2, February- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

तालिका संख्या 4

पीआरआई और उत्तरदाताओं की वर्तमान स्थिति का प्रतिनिधित्व करने वाली तालिका

वर्तमान पद	संख्या	प्रतिशत
राष्ट्रपति	28	11.66
सदस्य	202	84.16
समितियों के सदस्य	10	4.16
कुल	240	100

तालिका संख्या 5.14 उत्तरदाताओं की स्थिति की व्याख्या करें 11.66 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पीआरआई में पीआरआई में अध्यक्ष के रूप में पद ग्रहण किया, जबकि 84.16 प्रतिशत पीआरआई के सदस्य के रूप में और 4.16 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने समितियों के सदस्य के रूप में जगह ली थी। तालिका के विश्लेषण के बाद स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने पंचायती राज संस्थाओं के सदस्य के रूप में भूमिका निभाई है। पीआरआई के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए सदस्य के जागरूकता स्तर को सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए बढ़ाना होगा।

5. निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट है कि कई स्थानों पर पीआईआर का राजनीतिकरण किया गया है। इसलिए पंचायतों के लिए महिलाओं और पुरुषों को राजनीति में शामिल होने के लिए आकर्षित करना मुश्किल है। इसलिए राजनीतिक शरण जरूरी है। राजनीतिक दल और उनके प्रतिनिधि इस प्रकार पंचायती राज संस्थाओं में हस्तक्षेप कर रहे हैं; जिस लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए पंचायती राज संस्थाएं बनाई गई हैं, उसे और बेहतर बनाने के लिए इसकी जांच की जानी चाहिए। मजबूत पंचायती राज संस्थाएं बनाने के लिए प्रत्येक संस्थान चाहे वह केंद्र सरकार का विभाग हो या राज्य सरकार का विभाग ऐसा करने के लिए आगे आना चाहिए। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 2, February- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

और महिलाओं के लिए आरक्षण ने लोकतंत्र के जमीनी स्तर को मजबूत करने में सकारात्मक और निर्णायक भूमिका निभाई है।

धीरे–धीरे पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी ने लोकतांत्रिक व्यवस्था को दोगुना मजबूत बना दिया है। वे बच्चों और विशेषकर लड़कियों और महिलाओं की समस्याओं को हल करने में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। पंचायती राज संस्थाओं ने महिलाओं का अपने विकास के लिए स्थानीय संसाधनों, स्थानीय ऊर्जा और स्थानीय मानव संसाधनों का उपयोग करने और ग्रामीण क्षेत्र में लोगों को संगठित करने का सुनहरा अवसर दिया है। महिलाओं की भूमिका को बढ़ाने के लिए उन प्रशिक्षणों को प्रदान करना आवश्यक है ताकि विभिन्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाली महिलाएं समान भागीदार बन सकें और स्थानीय समस्याओं को हल करने में सक्रिय हो सकें। दिन–प्रतिदिन महिला जागरूकता को प्रोत्साहन मिल रहा है इसलिए जनतांत्रिक व्यवस्था को लोगों के प्रति अधिक संवेदनशील बनाना एक सकारात्मक कदम ह।

ऐसा करने से महिलाओं का सुधार देश के लिए अच्छा है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय ग्रामीण संसाधनों का दोहन करने के लिए। उनकी भागीदारी और सुधार से सामाजिक जीवन, राजनीतिक जीवन, शैक्षिक और चिकित्सा क्षेत्र और अन्य का उन्नयन होगा। इसलिए राजनीतिक रूप से सशक्त महिलाएं समाज और पूरे देश के कल्याण के लिए बहुत बेहतर कर सकती हैं। तो महिलाओं की भागीदारी का अर्थ है महिलाओं की बेहतरी, परिवार की बेहतरी, समाज की बेहतरी और राज्य की बेहतरी और पूरे राष्ट्र की बेहतरी। महिलाओं के प्रति धारणा और दृष्टिकोण अब बदल गया है, जो देश के लिए समग्र मानव संसाधन का दोहन करने के लिए अच्छा है। इसने महिलाओं को आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर बनाया है।

महिलाओं को समाज में अधिक सक्रिय रूप से जिम्मेदार बनाने और ग्राम सभा और पंचायत स्तर पर निर्णय लेने में पुरुष प्रतिनिधियों और निर्वाचित सदस्यों को अपनी सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। पुरुषों और महिलाओं की भागीदारी से समाज और देश का समग्र विकास हो सकता है। जहां पंचायती राज संस्थाओं के सामने भारत में आधी महिला संसाधनों का उपयोग नहीं किया जाता है। अब पंचायती राज संस्थाओं को लागू करने के बाद प्रजातांत्रिक व्यवस्था को अधिक सफल और फलदायी बनाने के लिए स्त्री–पुरूष सभी साधनों का प्रयोग किया जा रहा है। यह देश के सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक, शिक्षा और चिकित्सा क्षेत्र के सुधार और विकास के लिए संसाधनों का दोहन करने के लिए आवश्यक है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 2, February- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

सन्दर्भ सूची

- भारत सरकार, 2020, दसवीं पंचवर्षीय योजना (2002–07), नई दिल्लीः योजना आयोग।
- राजारमन, आई., 2020, पंचायतों का एक वित्तीय क्षेत्र, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।
- राजारमन, आई., 2019, तीसरे स्तर के लिए राजकोषीय हस्तांतरण में वृद्धि, एनआईपीएफपी, माइमियो।
- तहलका, 2019, पंचायत राज संस्थाओं को निधियों, कार्यों और पदाधिकारियों का हस्तांतरण – एक परिप्रेक्ष्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।
- विट्ठल, सी.पी.,2019, पंचायत वित्त के पहलूः पंचायत अधिनियमों का विश्लेषण, ग्रामीण विकास जर्नल 16(1), 123–134।
- व्यासुलु, वी., 2019, ऊपर से विकेंद्रीकरणः 1990 के दशक में पंचायती राज, बजट और नीति अध्ययन केंद्र, बैंगलोर, मार्च।
- टाइम्स न्यूज नेटवर्क, 2019, ग्राम पंचायत रिकॉर्ड के सीएजी ऑडिट के लिए तैयार, 04 अप्रैल।
- झा, शिखा, 2019, भारत में वित्तीय विकेंद्रीकरणः पंचायती राज संस्थानों के लिए ताकत, सीमाएं और संभावनाएं, :भारत में ग्रामीण विकेंद्रीकरण का अवलोकनः, विश्व बैंक के लिए पृष्ठभूमि पत्र।
- झा, शिखा, 2019, स्ट्रेंथनिंग लोकल गवर्नमेंट्सः रूरल फिस्कल विकेन्द्रीकरण इन इंडिया, इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली 29 जून पी.2611–2623।
- ए. आदिवासी रेड्डी, (2020), झारखण्ड में पंचायती राज, पंचायत और इंसान, सितंबर, नई दिल्ली।
- ए कृष्णा स्वामी, (2020), 'स्टडीज इन लोकल फाइनेंस एंड टैक्सेशन विद स्पेशल रेफरेंस टू मद्रास स्टेट', क्वार्टरली जर्नल ऑफ लोकल सेल्फ–गवर्नमेंट इंस्टीट्यूट, बॉम्बे, वॉल्यूम। ग्टप्प्।
- ए शारदा, (2020), पंचायती राज संस्थाओं के वित्त, कुरुक्षेत्र, टवस.ग्स्प्ट, नंबर 7, अप्रैल।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 2, February- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

- ए.सी. जेना, (2020), पश्चिम बंगाल में पंचायती राज वित्त – एक स्थिति अध्ययन, राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान, हैदराबाद।

- ए.ई. मार्शल, (2020), स्थानीय सरकार में वित्तीय प्रबंधन, जॉर्ज एलन और अनविन लिमिटेड, लंदन।

- ए.ई. मार्शल, (2020), स्थानीय सरकार में वित्तीय प्रबंधन, जॉर्ज एलन और अनविन लिमिटेड, लंदन।

- सरवनकुमार, ए.आर. (2016)। भारत में महिला शिक्षा का वर्तमान परिदृश्य। चोल साम्राज्य में शैक्षिक प्रथाओं पर ICHR द्वारा प्रायोजित एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में (850 – 1279 AD) EPICK – 2016 इतिहास विभाग और DDE, अलगप्पा विश्वविद्यालय, कराईकुडी द्वारा आयोजित किया गया।